माता नैना देवी का वरदान

सन्तान को माँ की आँखों की ज्योति कहा गया है। संसार को प्रकाश देने वाला पुत्र अपनी जन्म दात्री की आँखों की रोशनी छीनने का कारण बना। यह जानकर सुथरे शाह जी दुखी हो उठे। 'माँ' एक अक्षर के इस शब्द में संसार का सारा सुख, दुनिया की सारी दौलत और सृष्टि का सम्पूर्ण प्यार सिमट कर केन्द्रित हो गया। उन्हें हर पल, हर क्षण माँ का वात्सल्य, स्नेह एवं ममता भरा चेहरा नज़र आता जो उसे अपनी अमृतमयी गोद में लेने के लिए आतुर हो रहा हो तथा भुजाएँ फैलाए हुए आलिंगन करने के लिए बुला रहा हो। सारे संसार में उन्हें माँ का ही रूप दिखाई देने लगा।

फूलों की मुस्कान में, नक्षत्रों के विस्तार में, वृक्षों की हरीतिमा में, आकाश की नीलिमा में माँ का ही सौंदर्य तो बिखरा हुआ है। पक्षियों के कलरव में, भ्रमर की गुंजार में, कोयल की कू-कू में, सागर की लहरों में, माँ की ही मधुर ध्वनि दिखाई देती है। उनका अपनी जननी के प्रति प्रेमावेश बढ़ता ही जा रहा था। उनका व्यवहार कुछ विलक्षण होता जा रहा था। कभी वे माँ-माँ कहते हुए मस्ती में नाचने लगते थे। कभी वे वियोग के आँसू बहाने लगते थे। कभी हिचकियाँ भरने लगते थे। कभी शाखाएँ फैलाए हुए वृक्षों को देखकर सोचने लगते कि मेरी माँ भुजाएँ फैलाए मुझे आलिंगन करने के लिए बुला रही है। दौड़कर जाते और उनका आलिंगन करने लगते। इस तरह वे अपनी जन्मभूमि गुरदासपुर जा पहुँचे। वहाँ गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले मे जाकर माँ के बारे में पूछा तो पता चला कि उनकी माँ पुत्र वियोग में रो-रो कर अंधी हो गई व न जाने कहाँ चली गई थी। उसका किसी को पता नहीं चला। सुथरे शाह जी अपनी माँ के वियोग में व्याकुल हो रोने लगे। गुरदासपुर से वे होशियारपुर आ गए। वहाँ से वे माँ के दर्शन हेतु माता चिन्तपुर्णी गए। कुछ दिन वहाँ रह ज्वाला जी, कांगड़ा जी होते हुए चामुण्डा देवी जा पहुंचे। किन्तु उन्हें कहीं भी शान्ति न मिली।

माता चामुण्डा देवी से सुथरे शाह जी नैना देवी के मन्दिर जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपनी माँ के तर्पण हेतु अखण्ड तपस्या शुरु की। अन्न-जल का त्याग कर दिया। शरीर सूख कर काँटा हो गया। फिर भी उन्हें शान्ति न

मिली। उन्हें अपनी अंधी माँ ही दिखाई देती। इस तरह तपस्या करते-करते उन्हें बारह वर्ष बीत गए। एक दिन रात को वे वट वृक्ष के नीचे सो रहे थे। उन्हें चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई दिया। उन्होंने देखा कि उनके माता-पिता दोनों एक रथ में सवार उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं। उनकी माता की आँखें भी ठीक हो चुकी हैं। तभी उनकी आँख खुल गई। उन्हें अपने चारों ओर एक ज्योति दिखाई दी। उन्हें साक्षात् नैना देवी ने दर्शन दिए व डण्डे के रूप में चमत्कारी शक्ति दी। जिसके प्रतीक को आज भी सुथरे शाह अपने ठाकुर मान कर पूजते हैं।